

सम्पादकीय

बुनियादी सवाल है कि नफरत का भारत राष्ट्र धर्म भला ब्रितानी एनआरआई हिंदुओं की बुद्धि को भी कैसे भ्रष्ट कर गया? उन्हें कैसे अंधा और लंगूर बना गया? अपनी दलील है कि मोदी ने इतिहास की ग्रंथि पर भक्ति और अंधाविश्वास का जो अमृत हिंदुओं को चर्चाया है तो वह पूरी हिंदू सभ्यता को करपट व अंधाविश्वासी...

नफरत है अंधा-मूर्ख बनाने का केमिकल!

सोचें, ब्रिटेन में बसे हिंदुओं पर! कहते हैं और मैं भी मानता रहा हूं कि एनआरआई हिंदू पढ़े-लिखे-बुद्धिमान और पुरुषार्थी हैं। समझदार व सभ्य इंसान हैं। वे हम सनातनियों की शान हैं। इसलिए जब ब्रिटेन में कंजरेटिव पार्टी ने ऋषि सुनक को प्रधानमंत्री बनाने पर विचार किया तो मुझे वह सनातनी धर्म की काबलियत, हिंदू क्षमता, हिंदू गौरव की बानी लगी। यह सत्य है कि ब्रिटेन, अमेरिका और कनाडा जैसे कई देशों में भारतीय मूल के लोग अपनी काबलियत, बुद्धि, खुले-उदार दिमाग से वहां महाप्रिणत बने हैं। तो लोग उन देशों की सत्ता में हैं। मंत्री और अफसर हैं। मतलब सनातनी हिंदू मैथा को सच्चे प्रतिसंपर्क कीमत व सभ्यता के गौरव। लेकिन आठ साल के मोदी राज की छाया उन देशों में भी या पहुंची। नफरत से पैदा हुए देशी लग्भूर और टीवी चौनलों व सोशल मीडिया के भगवाई रंग-रूप के जातू ने इन एनआरआई हिंदुओं की बुद्धि का भी हरण कर लिया। उन्हें गंवार, मूर्ख और बुद्धिहीन बना डाला।

तभी मैड इन हिंडिया के नए नफरती केमिकल का कमाल देखिए जो ब्रिटेन के लिस्टर शहर के हिंदुओं ने दुबई में हो रहे क्रिकेट मैच को देखा तो उनका शहनुमानव्य ऐसा जागा कि सड़कों पर जय श्रीराम के नारा लगाने लगे। जैसे तिरगा यात्रा आदि के मोदी-शाह के आव्याज में भारत में होता है और मुस्लिम बस्ती में जा कर पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगते हैं तो हिंदू बहुल लिस्टर के हिंदू मुस्लिम इलाके में जय राम के नारों से अपना शहनुमानव्य दिखाने लग। मुस्लिमान भी घर से बाहर निकल पड़े और उनका जवाबी नारा और अल्ला हूं अकबर से प्रतिवाद! तो नोट करने वाली पहली बात, जो दिमाग को अंधा और मूर्ख बनाने का भारत केमिकल ब्रिटेन के हिंदुओं की खोपड़ी में जा पैठा। यह अनहोनी और सत्यानाशी बात है। इससे अब विकसित, सभ्य, लोकतांत्रिक देशों में हिंदुओं के लंगूर रूप पर वॉच होगी। हिंदू और हिंदू की राजनीतिक सोच की बदनामी फैलेगी। हम और आप अनुमान नहीं लगा सकते हैं कि ब्रिटेन

के गोरे बहुल सभ्य समाज में लिस्टर की सड़क पर जय श्रीराम के नारों और उसकी क्रिया-प्रतिक्रिया का कैसा प्रभाव हुआ होगा या आगे बनेगा। ऋषि सुनक से लेकर वहां के तमाम हिंदू मंत्री और नेता सभी की राजनीति पर ग्रहण लग गया है। यही स्थिति कनाडा और अमेरिका के एनआरआई हिंदुओं की बनती हुई है। तो नफरत के हिंदू केमिकल का परिणाम ठेठ ब्रितानी हिंदुओं के दिमाग में भी। इसका परिणाम? हिंदू बुरी तरह पीटे। उस समाज में जललात तो पाकिस्तानियों व मुस्लिमानों के लिए मौका। यह एक गहरी बात है। इसे उस राष्ट्रीय संयुक्त संघ को खास तौर पर जानाना चाहिए, जिसके प्रमुख मोहन भगवत डॉग मारते हैं कि उनका संगठन तीन दिन में स्वयंसेवकों की सेना खड़ी कर देगा। सोचें, ऐसी डॉग से भविष्य में क्या होगा? कथित सेने वैसी ही भागी और पीटी हुई होंगी, जैसे लिस्टर में अपनी बहुलता के लिएक में भी हिंदू पीटे हैं। हां, इतने पीटे कि भारत के उच्चायुक्त को वहां बयान देना पड़ा। और विश्व हिंदू परिषद ब्रितानी प्रधानमंत्री से अपील करते हुए है। बुनियादी सवाल है कि नफरत का भारत राष्ट्र धर्म भला ब्रितानी एनआरआई हिंदुओं की बुद्धि को भी कैसे भ्रष्ट कर गया? उन्हें कैसे अंधा और लग्भूर बना गया? अपनी दलील है कि मोदी ने इतिहास की ग्रंथि पर भक्ति और अंधाविश्वास का जो अमृत हिंदुओं को चखाया है तो वह पूरी हिंदू सभ्यता को करपट व अंधाविश्वासी बनाते हुए है। ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका के हिंदू भला कैसे प्रभाव से बचे रहते? संभव ही नहीं जो विद्या में स्वदेश के जादगर नरेंद्र मोदी और उनके रंग में रंग भारत राष्ट्र का नफरत का संकल्प उनके दिमाग में न पैठे। वे सड़क पर नहीं उतरें। लिस्टर के हिंदुओं में गुजराती खासे हैं। इसलिए उनका भी यह कर्तव्य पथ है जो वे ब्रिटेन में अमित शाह के पानीपत की तीसरी लडाई का डेमो कर दिखाएं। तभी लिस्टर में जो हुआ वह भविष्य के भारत का डेमो है। आप नहीं मानते। मत मानिए। वक्त का इंतजार कीजिए।

पुरानी पेंशन का चारा

पुरानी पेंशन योजना की समाप्ति का फैसला नव-उदारवादी नीतियों के कारण हुआ, जिन्हें देश ने लगभग आम सहमति के साथ स्थीकार कर लिया था। उन नीतियों के जारी रहते उनके एक स्वाभाविक को पलटना एक विसंगति ही माना जाएगा। राज्यों में विधानसभा चुनाव से ठीक पहले अब विभिन्न विषयों दलों की तरफ से सरकारी कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना वापस लाने के बाद की झड़ी लग गई है। संभवतरु इस बाद के पीछे यह धारणा है कि चुनाव नीतियों को प्रभावित करने में सरकारी कर्मचारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। फिर यह भी माना जाता है कि अगर एक कर्मचारी खुश होगा, तो उससे जुड़े कई परिजनों का वोट संबंधित पार्टी को मिल सकता है। लेकिन इसी वर्ष उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड के विधानसभा चुनावों में यह वादा समाजवादी पार्टी और कांग्रेस को जीत दिलाने में नाकाम रहा। फिर भी राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सरकारों ने पुरानी पेंशन योजना बहाल कर दी है और अब गुजरात में ऐसा ही वादा कांग्रेस और आम आदमी पार्टी दोनों ने किया है। लेकिन वहां भी इसके प्रभावी होने की समावाप्त कम ही है। इसलिए कि तमाम मतदाताओं के बीच सरकार कर्मचारियों की संख्या न्यून होती है, बल्कि खुले सरकारी विभागों में अब लगभग एक चौथाई अस्थायी कर्मचारी हैं, जिन्हें कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं मिलती।

वैसे भी बाकी समाज ऐसी सुरक्षाओं से विचित रहे, जबकि सरकारी नौकरी पाजाने वाले कुछ खुशकिस्मत लोगों की रिटायर्ड जिंदगी निश्चित होकर गुजरे, इस बात का कोई तक नहीं हो सकता। गौर करने की बात है कि 2004 में पुरानी पेंशन योजना की समाप्ति का फैसला नव-उदारवादी कदरता की उन नीतियों के कारण हुआ, जिसे देश ने लगभग आम सहमति के साथ स्थीकार कर लिया था। अब बाकी क्षेत्रों में उन नीतियों पर आगे बढ़ना और उनके स्वाभाविक परिषिका एक निर्णय को पलट देना एक विसंगति ही माना जाएगा। बेहतर यह होते हैं कि राजनीतिक दल इन नीतियों पर अमल के तीन दशक के अनुभव के आधार पर इनकी अपना पूरा आकलन देश के सामने रखते। लेकिन ऐसा कर सकने की बौद्धिक क्षमता और असाधारण किसी दल के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने में बहुत समय लगा जाएगा। देश को वापस मजबूत बनाने में। राहुल को जो करना है करें मगर यह विवाद खत्म नहीं होगा। यह टिप्पिकल प्रतिगामी सास दृष्टि है। अरे हमें ही सीधा पल्ला थोड़ी अच्छा लगता है, लड़के के बाहर दोनों जगह बहुत गलत संकेत दे रही है। देश के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने में बहुत समय लगा जाएगा। देश को वापस मजबूत बनाने में। राहुल को जो करना है करें मगर यह विवाद खत्म नहीं होगा। यह टिप्पिकल प्रतिगामी सास दृष्टि है। अरे हमें ही रोज जाना चाहिए। जबकि दोनों जगह बहुत सारे लोगों को जाना चाहिए। जबकि दोनों जगह बहुत गलत संकेत दे रही है। देश के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने में बहुत समय लगा जाएगा। देश को वापस मजबूत बनाने में। राहुल को जो करना है करें मगर यह विवाद खत्म नहीं होगा। यह टिप्पिकल प्रतिगामी सास दृष्टि है। अरे हमें ही रोज जाना चाहिए। जबकि दोनों जगह बहुत गलत संकेत दे रही है। देश के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने में बहुत समय लगा जाएगा। देश को वापस मजबूत बनाने में। राहुल को जो करना है करें मगर यह विवाद खत्म नहीं होगा। यह टिप्पिकल प्रतिगामी सास दृष्टि है। अरे हमें ही रोज जाना चाहिए। जबकि दोनों जगह बहुत गलत संकेत दे रही है। देश के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने में बहुत समय लगा जाएगा। देश को वापस मजबूत बनाने में। राहुल को जो करना है करें मगर यह विवाद खत्म नहीं होगा। यह टिप्पिकल प्रतिगामी सास दृष्टि है। अरे हमें ही रोज जाना चाहिए। जबकि दोनों जगह बहुत गलत संकेत दे रही है। देश के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने में बहुत समय लगा जाएगा। देश को वापस मजबूत बनाने में। राहुल को जो करना है करें मगर यह विवाद खत्म नहीं होगा। यह टिप्पिकल प्रतिगामी सास दृष्टि है। अरे हमें ही रोज जाना चाहिए। जबकि दोनों जगह बहुत गलत संकेत दे रही है। देश के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने में बहुत समय लगा जाएगा। देश को वापस मजबूत बनाने में। राहुल को जो करना है करें मगर यह विवाद खत्म नहीं होगा। यह टिप्पिकल प्रतिगामी सास दृष्टि है। अरे हमें ही रोज जाना चाहिए। जबकि दोनों जगह बहुत गलत संकेत दे रही है। देश के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने में बहुत समय लगा जाएगा। देश को वापस मजबूत बनाने में। राहुल को जो करना है करें मगर यह विवाद खत्म नहीं होगा। यह टिप्पिकल प्रतिगामी सास दृष्टि है। अरे हमें ही रोज जाना चाहिए। जबकि दोनों जगह बहुत गलत संकेत दे रही है। देश के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने में बहुत समय लगा जाएगा। देश को वापस मजबूत बनाने में। राहुल को जो करना है करें मगर यह विवाद खत्म नहीं होगा। यह टिप्पिकल प्रतिगामी सास दृष्टि है। अरे हमें ही रोज जाना चाहिए। जबकि दोनों जगह बहुत गलत संकेत दे रही है। देश के अंदर से खोखले होने की। जिसे वापस भरने म

मुंहासों की समस्या से राहत दिलाने में मदद कर सकते हैं ये पांच आयुर्वेदिक नुस्खे



अगर आपकी त्वचा पर कील-मुंहासों की समस्या से परेशान हैं और कई रिक्त केयर प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करने के बावजूद इनसे राहत नहीं मिल रही तो आपको आयुर्वेदिक नुस्खों को अपनाना चाहिए। आयुर्वेदिक नुस्खे त्वचा को नुकसान पहुंचाए बिना परेशानी से राहत दिलाने में काफी मदद कर सकते हैं, भले ही आपकी त्वचा किसी भी प्रकार की हो। आइए हम आपको मुंहासों से राहत दिलाने में मददगार पांच प्रमुख आयुर्वेदिक नुस्खे बताते हैं।

मुंहासों से निजात दिलाने में मददगार हो सकती है हल्दी

हल्दी मुंहासों से निजात दिलाने में काफी मददगार साबित हो सकती है। हल्दी में एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटी-माइक्रोबियल और एंटी-ऑक्सीडेंट गुण के साथ करक्यूमिन नामक एक खास तत्व भी मौजूद होता है। ये गुण मुंहासे, उनके निशान सहित हाइपरपिंगेशन जैसी समस्याओं का इलाज करने में मदद कर सकते हैं। इसके लिए रोजाना सुबह सबसे पहले पहले आधा इंच धूली और छिली हुई कच्ची हल्दी का सेवन करें। आप वाहं तो हल्दी का फेस पैक बनाकर भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

नीम से भी मिल सकती है राहत

नीम में एंटी-फंगल, एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण मौजूद होते हैं और ये त्वचा को मुंहासों से छुटकारा दिला सकते हैं। समस्या से राहत के लिए नीम का इस्तेमाल फेस पैक के तौर पर भी किया जा सकता है। इसके लिए सबसे पहले एक कटोरी में नीम की पत्तियों का पेस्ट और नींबू का रस मिलाएं। अब तैयार मिश्रण को चेहरे पर लगाएं और जब यह पूरी तरह से सूख जाए तो मुंह को ठंडे पानी से धोकर साफ कर लें।

एलोवेरा भी है प्रभावी

एक शोध के अनुसार, एलोवेरा एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी-बैक्टीरियल गुणों से समुद्ध होता है। ये मुंहासों का कारण बनने वाले बैक्टीरिया से बचाव का काम कर सकते हैं और इनसे छुटकारा भी दिला सकते हैं। लाभ के लिए एलोवेरा जेल, मुल्तानी मिट्टी और गुलाब जल मिलाकर एक गाढ़ पेस्ट तैयार कर लें। इसके बाद उसे चेहरे पर लगाएं और सूखने से बाद ठंडे पानी से साफ करें।

तुलसी करेगी मदद

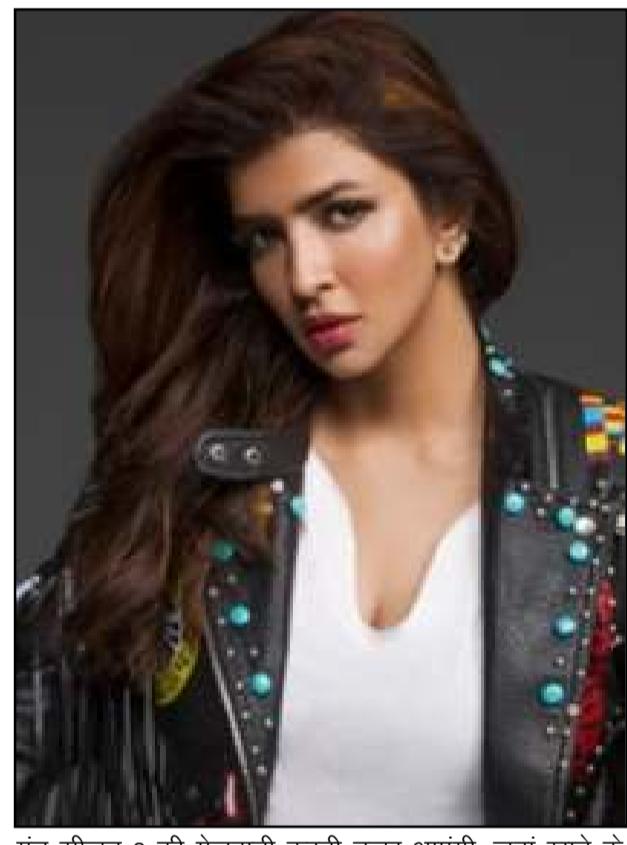
तुलसी में एंटी-एक्सीट्रोज और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण मौजूद होते हैं और ये त्वचा को मुंहासों से छुटकारा दिला सकते हैं। लाभ के लिए रोजाना सुबह खाली पेट दो तुलसी के पत्ते चबाएं। आप इसका इस्तेमाल फेस पैक के रूप में भी कर सकते हैं। इसके लिए दो चम्मच मुल्तानी मिट्टी में एक बूंद तुलसी का तेल और एक बड़ी चम्मच एलोवेरा जेल मिलाएं। अब इसे चेहरे पर लगाकर 10 मिनट के बाद पानी से साफ करें।

शहद का फेस मास्क लगाएं

मुंहासे रहित चेहरा पाने के लिए आयुर्वेदिक नुस्खे के तौर पर शहद के फेस मास्क का इस्तेमाल करना भी बहुत फायदेमंद हो सकता है। इसके लिए पहले एक कटोरी में दो चम्मच शहद और आधी चम्मच दालवीनी का पाउडर मिलाएं। अब जब यह पूरी तरह से सूख जाए तो मुंह को ठंडे पानी से धोएं। शहद का फेस मास्क लगाएं।

तेलुगु अभिनेत्री लक्ष्मी मांचू सेलेब फूड शो शेफ मंत्र सीजन 2 की मेजबानी करेंगी

भोजन और फिल्म सितारे एक स्वादिष्ट संयोजन हैं। अभिनेत्री और फिल्म निर्माता लक्ष्मी मांचू जो खुद खाने के शैकीन हैं, शेफ



बच्चन पांडे, पृथ्वीराज, रक्षाबंधन के बाद अब अक्षय कुमार जैकलीन फर्नांडीस और नुसरत भरुचा के साथ मिलकर लेकर आ रहे हैं राम सेतु। फिल्म का आज टीजर रिलीज किया जा चुका है। जो काफी दमदार है और कापी हड तक कहानी को भी समझने में मदद करती है। टीजर से पहले अक्षय कुमार ने फिल्म से अपना पोस्टर रिलीज किया था जिसमें वो एकदम अलग लुक में नजर आए थे। अब टीजर में उनका तुक और एकशन शानदार लग रहा है।

इंस्टाग्राम पर शराम सेतु के टीजर को जारी करते हुए अक्षय कुमार ने कैप्शन में लिखा, राम सेतु की पहली झालकज्जर स्टफॉर्यू। बहुत प्यार से बनाया है, उम्मीद है आपको पसंद आएगा। बताना जरूर।

रोमांचकारी टीजर में अक्षय सफेद दाढ़ी और बिखरे हुए लंबे बालों में

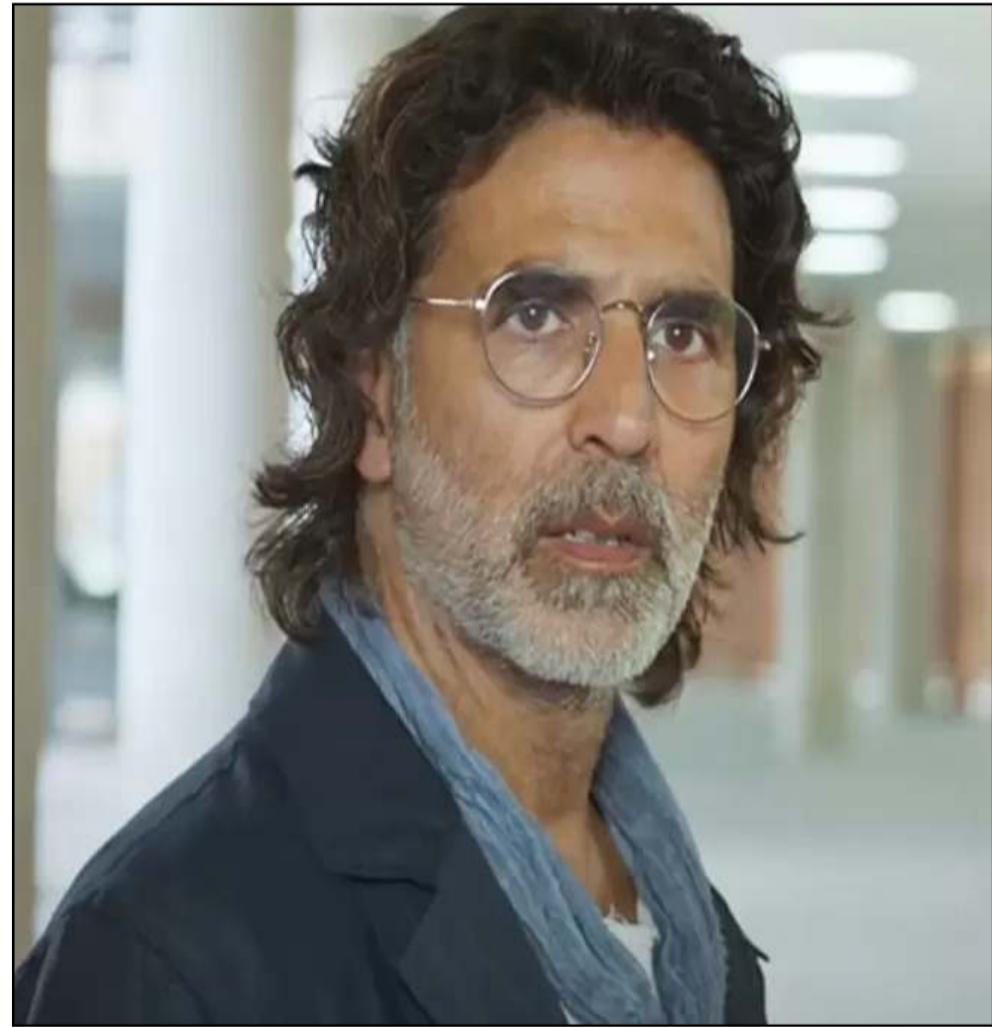
मंत्र सीजन 2 की मेजबानी करती नजर आएंगी, जहां खाने के विकल्प अनिवार्य रूप से बहुचर्चित हस्तियों की जीवन शैली और व्यक्तित्व को दर्शाते हैं। यह शो दर्शकों को उनके व्यंजनों की पसंद के माध्यम से उनके जीवन में शायद ही कभी खोजे गए मजेदार आयाम से परिवर्तित करता है।

शो के लॉन्च पर, लक्ष्मी मांचू ने टिप्पणी की, मांचू के परिवार के लिए, भोजन हमेशा एक जुनून रहा है। यह एक ऐसा तत्व है जो हम सभी को एक साथ लाता है और अधिकारी विवरों की तरह, किसी भी विशेष अवसर के लिए एक केंद्र बिंदु है। अच्छे खाने का अनुभव हमें आपको खुश करता है। मैं शेफ मंत्र 2 का डिजिटल प्रशंसकों से मिलने का मौका दिया दिया हूँ।

शो के लॉन्च पर, लक्ष्मी मांचू ने टिप्पणी की, मांचू के परिवार के लिए, भोजन हमेशा एक जुनून रहा है। यह एक ऐसा तत्व है जो हम सभी को एक साथ लाता है और अधिकारी विवरों की तरह, किसी भी विशेष अवसर के लिए एक केंद्र बिंदु है। अच्छे खाने का अनुभव हमें आपको खुश करता है। मैं शेफ मंत्र 2 का डिजिटल प्रशंसकों से मिलने का मौका दिया दिया हूँ।

30 सितंबर से हर शुक्रवार दोपहर 2 बजे स्ट्रीमिंग अहा तेलुगु पर, प्रत्येक सप्ताह प्रभावशाली टॉलीयुड हस्तियां मालविका मोहन, रितु वर्मा, और विद्या रमन, अच्युत लोगों के साथ शामिल होंगी।

सफेद दाढ़ी, बिखरे बालों में दिखे अक्षय, राम सेतु का मच-अवेटेड टीजर हुआ आउट



एक्षन मोड में नजर आ रहे हैं। टीजर उनके साथ ही बाकि कास्ट की झलक भी दिखाई गई है। फिल्ममेंकर अभिषेक शर्मा के निर्देशन में बनी यह फिल्म 25 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। बता दें कि यह फिल्म अक्षय की कंपनी कैपे ऑफ गुड फिल्म्स के साथ-साथ अमेजन प्राइम वीडियो, अबुदतिया एंटरटेनमेंट और लाइका प्रोडक्शंस में बनी है।

शराम सेतु एक एकशन-एडवेंचर ड्रामा है, जो एक आँकलॉजिस्ट आर्यन कुलश्रेष्ठ (अक्षय कुमार) की कहानी है, जो यह जांचता है कि राम सेतु एक मिथक है या वास्तविकता। फिल्म में अक्षय, नुसरत और जैकलीन के अलावा सात्यदेव करण और एम. नासिर भी ग्राथमिक भूमिकाओं में हैं।

इस साल बॉलीवुड के खिलाड़ी अक्षय कुमार की बच्चन पांडे, रक्षाबंधन, पृथ्वीराज, कठपुतली रिलीज हुई लेकिन किसी भी फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है। ऐसे में अक्षय कुमार को अपनी फिल्म राम सेतु से काफी उमीद है।

अक्षय कुमार शराम सेतु के अलावा फिल्म शोएमजी 2 ये में यामी गौतम, पंकज त्रिपाठी और अरुण गोविल के साथ नजर आएंगे। इसके अलावा टाइगर श्रॉफ के साथ शब्द मियां छोटे मियां, इमरान हाशमी के साथ शेस्टकीय और फिल्म गोरखा, कैप्सूल गिल में दिखने वाले हैं।

कहा कि उनके लिए सबसे चुनौतीपूर्ण काम भोजपुरी में बोलना था और उन्होंने भाषा सीखने के लिए अतिरिक्त प्रयास किया। जब उन्हें निर्माताओं का फोन आया, तो उन्हें यकीन नहीं था कि वह इसके साथ न्याय कर पाएंगी। लेकिन उनके मुताबिक उन्हें पूरा भरोसा था कि वह इस रोल के लिए परफेक्ट होंगी। उन्होंने कहा कि उन्होंने मुझे अलग-अलग किरदार करते देखा है और उन्हें यकीन है कि मैं इस बोली को भी सीख सकती हूँ। फिर भी, मैंने उनसे एक दिन मांगा, जिसके दौरान मैंने बहुत सारी भोजपुरी सीखी, और फिर ऑडिशन दिया। अनुष्ठान ने अपने चरित्र के बारे में बताया, यह रवीना टंडन मैं के साथ एक समानांतर मुख्य भूमिका है और चरित्र का पूरा सेट और कहानी बहुत अलग है। मैं कभी भी पटना में किसी भी कहानी का हस्ताना नहीं रखी या यहां तक कि शहर का दौरा भी नहीं किया।, लेकिन मैं इस भूमिका के लिए तैयारी करना चाहती हूँ। इस चरित्र की यात्रा बहुत अलग है, फिर भी इसका असली अनुष्ठान के साथ कुछ संबंध है। रवीना टंडन, अनुष्ठान कौशिक, सरीश कौशिक, चंदन रॉय सान्त्याल और जतिन गोस्सामी अभिनीत पटना शुक्ला अगले साल रिलीज होने के लिए बिल्कुल तैयार हैं।

कहा कि उनके लिए सबसे चुनौतीपूर्ण काम भोजपुरी में बोलना था और उन्होंने भाषा सीखने के लिए अतिरिक्त प्रयास किया। जब उन्हें निर्माताओं का फोन आया, तो उन्हें यकीन नहीं था कि वह इसके साथ न्याय कर पाएंगी। लेकिन उनके मुताबिक उन्हें पूरा भरोसा था कि वह इस रोल के लिए परफेक्ट होंगी। उन्होंने कहा कि उन्होंने मुझे अलग-अलग किरदार करते देखा है और उन्हें यकीन है कि मैं इस बोली को भी सीख सकती हूँ। फिर भी, मैंने उनसे एक दिन मांगा, जिसके दौरान मैंने बहुत सारी भोजपुरी सीखी, और फिर ऑडिशन दिया। अनुष्ठान ने अपने चरित्र के बारे में बताया, यह रवीना